Youth Parliament
ख्याल संविधान और संस्कृति का

राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं चैयरपर्सनः
पार्वती जाँगिड़ सुथार
mannkibaat@outlook.com

पत्रांकः **YP/MSG/2019/45** दिनांकः **02.09.2019**

संदेश

मुझे यह जानकर अति–प्रसन्नता हुई कि ***International Organization for Educational Development*** - IOED एवं International Police Commission – IPC India द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षणिक सम्मेलन व भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा है, मैं इस आयोजन की सफलता की मंगल कामना करती हूँ और आशा करती हूँ कि यह आयोजन भारत व सहभागी देशों में शैक्षणिक स्तर उच्च कोटी का बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

इस अवसर पर जब बात शिक्षा की हो रही हैं तो मैं शिक्षकों के नाम विशेष संदेश देना चाहूंगी–

श्रैष्ठ राष्ट्र निर्माण में शिक्षा और शिक्षक के देश के प्रति कर्तव्य बहुत मायने रखते है। एक शिक्षक कर्तव्य–परायण होगा तो ही आने वाली पीढ़ी राष्ट्रीयता के प्रति समर्पित होगी और श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माण की परिकल्पना साकार होगी।

शिक्षक गौरव घोषित तब होगा जब ये राष्ट्र गौरवशाली होगा और ये राष्ट्र गौरवशाली तब होगा जब ये राष्ट्र अपने जीवन मूल्यों एवं परम्पराओं का निर्वाह करने में सफल एवं सक्षम होगा। और ये राष्ट्र सफल एवं सक्षम तब होगा, जब शिक्षक अपने उतरदायित्व का निर्वाह करने में सफल होगा और शिक्षक सफल तब कहा जाएगा, जब वह राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति में राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करने में सफल हो। यदि व्यक्ति राष्ट्र भाव से शून्य है, राष्ट्र भाव से हीन है, अपनी राष्ट्रीयता के प्रति सजग नही है तो ये शिक्षक की असफलता है और इस देश का अनुभव साक्षी है की राष्ट्रीय चरित्र के अभाव में हमने अपने राष्ट्र को अपमानित होते देखा है। हमने इतिहास में देखा है की शस्त्र से पहले हम शास्त्र के अभाव से पराजित हुए है। हम शस्त्र और शास्त्र धारण करने वालो को राष्ट्रीयता का बोध नही करा पाए और व्यक्ति से पहले खंड–खंड हमारी राष्ट्रीयता हुई। शिक्षक इस राष्ट्र की राष्ट्रीयता व् सामर्थ्य को जाग्रत करने में असफल रहा। यदि शिक्षक पराजय स्वीकार कर ले तो पराजय का वो भाव राष्ट्र के लिए घातक होगा ।

अतः वेद वंदना के साथ साथ राष्ट्र वन्दना का स्वर भी दशों दिशाओं में गूंजना आवश्यक है। आवश्यक है व्यक्ति एवं व्यवस्था को ये आभास कराना की यदि व्यक्ति की राष्ट्र की उपासना में आस्था नही रही तो उपासना के अन्य मार्ग भी संघर्ष मुक्त नही रह पायेंगे। अतः व्यक्ति से व्यक्ति, व्यक्ति से समाज व समाज से राष्ट्र का एकीकरण आवश्यक है। अतः शीघ्र ही व्यक्ति समाज एवं राष्ट को एक सूत्र में बांधना होगा और वह सूत्र राष्ट्रीयता ही हो सकती है। शिक्षक इस चुनोती को स्वीकार करे व शीघ्र ही राष्ट्र का नव निर्माण करने के लिए सिद्ध हो। संभव है की आपके मार्ग में बाधाये आएँगी। पर शिक्षक को उन पर विजय पानी होगी और आवश्यकता पड़े तो शिक्षक शस्त्र उठाने में भी पीछे ना हटे। मैं स्वीकार करती हुं की शिक्षक का सामर्थ्य शास्त्र है और यदि मार्ग में शस्त्र बाधक हो और राष्ट्र मार्ग के कंटक सिर्फ शस्त्र की ही भाषा समझते हो तो शिक्षक उन्हें अपने सामर्थ्य का परिचय अवश्य दे। अन्यथा सामर्थ्यहीन शिक्षक अपने शास्त्रों की भी रक्षा नही कर पायेगा। संभव है की इस राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने के लिए शिक्षक को सत्ताओं से भी लड़ना पड़े पर स्मरण रहे की सत्ताओ से राष्ट्र महत्वपूर्ण है। राजनैतिक सत्ताओ के हितो से राष्ट्रीय हित महत्वपूर्ण है। अतः राष्ट्र की वेदी पर सत्ताओ की आहुति देने पड़े तो भी शिक्षक संकोच न करे। इतिहास साक्षी है की सत्ता व् स्वार्थ की राजनीति ने इस राष्ट्र का अहित किया है। हमें अब सिर्फ इस राष्ट्र का विचार करना है। यदि शासन सहयोग दे तो ठीक अन्यथा शिक्षक अपने पूर्वजो के पुण्य व कीर्ति का स्मरण कर अपने उतरदायित्व का निर्वाह करने में सिद्ध हो, विजय निश्चित है . सप्तसंधू की संस्कृति की विजय निश्चित है, विजय निश्चित है, इस राष्ट्र के जीवन मूल्यों की, विजय निश्चित है इस राष्ट्र की, आवश्यकता मात्र आवाहन की है। **हे भारतवर्ष के समस्त शिक्षकों अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य को पहचानों, उसे आत्म अंगीकार करो, श्रैष्ठ निमार्ण की महत्ती भूमिका आपकी है।**

पार्वती जाँगिड / Parvati Jangid
राष्ट्रीय अध्यक्ष / National President
युवा संसद, भारत / Youth Parliament of India
(पार्वती जाँगिड़ सुथार)
चैयरपर्सन– युथ पार्लियामेंट ऑफ इण्डिया।
मोबाइलः 9829049516, 9214393155

https://www.facebook.com/PARVATIJANGIDSUTHAROFFICIAL , https://twitter.com/TheParvati

पत्राचार पताः 56, गायत्री नगर, पालरोड़, जोधपुर–342014 राजस्थान youthparliamentoffice@gmail.com